Dr. Jaya
Deptt. of sociology
B.A Part I (Hons.)
Paper - 2, unit - 5
Lecture series :- 75

Date :- 14/07/2020

Topic :- Religion of sociology

4) New Attitudes towards collection of Interest on loans — जहाँ कैथोलिक धर्म गरीबों के ऊपर ब्याज लेना एक अपराध मानते हैं, वहीं प्रोटेस्टेण्ट धर्म के आधार धन से धन कमाने की अनुमति प्रदान करते हैं। सन् 1545 में जब कालविन नाम ने यह नारा दिया कि धन से धन कमाया ~~की अनुमति प्रदान करते हैं~~ जाना चाहिए तभी से प्रोटेस्टेण्ट धर्म द्वारा गरीबों पर लिये गए ब्याज को उचित माना जाने लगा। केवल इसीलिए के आज प्रोटेस्टेण्ट धर्म को मानने वाले जनता

में पूंजीवाद का विकास होना आरंभ हो गया। कैथोलिक धर्म के अनुयायी अपनी धार्मिकता के कारण ऋण और ब्याज के लेन-देन से दूर रहे। बेबर के अनुसार अनेक ऐसे दूसरे धर्मों में भी ऋण पर ब्याज को अनुचित माना जाता है। उदाहरण के लिए, इस्लाम धर्म के ग्रन्थ कुरान में लिखा है कि सूद लेना अपराध है। कुरान में सूद लेने वाले व्यक्ति को दण्ड देने की भी व्यवस्था है। वेबर का मानना है कि जिन समाजों में धर्म से धन कमाने की प्रवृत्ति नहीं है, उन समाजों में कुछ हद से ऋण लेने तथा देने की पूंजी का प्रचलन नहीं बढ़ पाता है। इसके फलस्वरूप ऐसे समाजों में व्यवसायों तथा उद्योगों की भी अधिक स्थापना नहीं हो पाती है। जबकि प्रोटेस्टेंट धर्म ने ऋण और ब्याज के प्रति अधिक उदारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जिसके फलस्वरूप इससे प्रभावित समाजों में पूंजी का महत्व बढ़ने लगा।

8) Strictures on Alcoholism — प्रोटेस्टेंट धर्म के आचार्य अपने अनुयायियों पर नशा करने पर प्रतिबंध लगाते हैं। वेबर ने नशे पर लगाए जाने वाले इस प्रतिबंध को पूंजीवाद के विकास का एक महत्वपूर्ण कारण स्वीकार किया है। ऐसा इसलिए है कि शराब न पीने वाले व्यक्ति ही बड़ी-बड़ी मशीनों के बीच अधिक कुशलतापूर्वक काम कर सकते हैं। वेबर ने बतलाया कि कैथोलिक धर्म में नशे के प्रति इस तरह का कोई ~~प्रतिबंध~~ प्रतिबंध नहीं है जिसके फलस्वरूप इसके अनुयायियों में काम के प्रति अधिक उत्साह नहीं पाया जाता। दूसरी ओर, प्रोटेस्टेंट धर्म के अनुयायियों

ने मद्यनिषेध का एक व्यापक आंदोलन चलाकर न केवल अपने आलस्य को कम कर दिया बल्कि काम के प्रति अपनी कुशलता तथा उत्साह में वृद्धि की। इस प्रकार प्रोटेस्टेंट धर्म का यह आचार भी पूंजीवाद के विकास में सहायक सिद्ध हुआ।

6) Encouragement to literacy and learning — प्रोटेस्टेंट धर्म का एक प्रमुख आचार यह है कि इसके प्रत्येक अनुयायी को बाइबल पढ़ने के लिए किसी पुरोहित अथवा पादरी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए बल्कि इस पवित्र ग्रन्थ को स्वयं पढ़ना चाहिए। वेबर का कथन है कि इस आचार के कारण प्रोटेस्टेंट धर्म के अनुयायियों में पढ़ने और सीखने की प्रवृत्ति बढ़ी तथा इसी के फलस्वरूप प्रोटेस्टेंट धर्म के अनुयायियों में साक्षरता तथा शिक्षा की दर बढ़ सकी। वेबर के साथ अनेक दूसरे समाजशास्त्रियों ने यह भी स्पष्ट किया कि शिक्षा की दर में होने वाली वृद्धि का सामाजिक विकास से एक सीधा संबंध है। वास्तविकता यह है कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था जिन तर्कप्रधान संबंधों पर आधारित है, उनका विकास शिक्षा के बिना नहीं हो सकता। इन दृष्टिकोणों से प्रोटेस्टेंट धर्म के आचार पुनः पूंजीवाद के सहायक प्रतीत होते हैं।